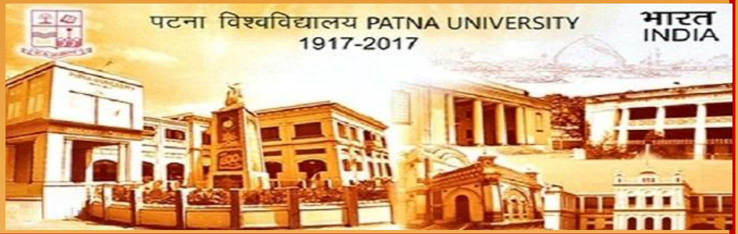

Patna University In News (09.01.2023)

दैनिक भास्कर

पीयू से भी पुराना है पटना कॉलेज का इतिहास, स्थापना दिवस आज

1863 में हुई थी स्थापना, विश्वविद्यालय से सेवानिवृत्त हुए शिक्षक व कर्मचारी और 2021 व 2022 के स्नातक टॉपर होंगे सम्मानित

एजुकेशन रिपोर्टर | पटना

पटना विश्वविद्यालय जो देश का सातवां सबसे पुराना विश्वविद्यालय, पटना कॉलेज का इतिहास उससे भी पुराना है। पटना विश्वविद्यालय की स्थापना जहां 1917 में हुई थी, वहीं पटना कॉलेज की स्थापना 1863 में हुआ था। यह कॉलेज अब 161 साल का हो चुका है। यह ब्रिटिश राज के भी सबसे पुराने कॉलेजों में एक है। पटना कॉलेज का 161वां स्थापना दिवस समारोह सोमवार को सुबह साढ़े ग्यारह बजे से कॉलेज के सेमिनार हॉल में आयोजित किया जा रहा है। इस मौके पर कॉलेज सज धज कर तैयार है।

पटना कॉलेज का ध्वज लहराया जाएगा, उड़ाए जाएंगे 161 गुब्बारे

जनवरी 2022 से दिसंबर 2022 के बीच विवि की सेवा से सेवानिवृत्त हुए शिक्षक व कर्मचारी तथा 2021-2022 स्नातक में प्रथम स्थान पाने वाले छात्र-छात्राओं को सम्मानित किया जाएगा। कॉलेज की पत्रिका का भी लोकार्पण होगा। विधान पार्षद प्रो. डॉ. राम वचन राय मुख्य अतिथि हैं। कुलपति प्रो गिरीश कुमार चौधरी समेत अन्य अधिकारी मौजूद रहेंगे। अतिथियों का स्वागत प्राचार्य प्रो तरुण कुमार करेंगे। मौके पर पटना कॉलेज का ध्वज लहराया जाएगा। साथ ही 161 गुब्बारे उड़ाए जाएंगे।

दिनकर से लेकर जेपी तक इसी कॉलेज के छात्र रहे

पटना कॉलेज के छात्रों ने देश-दुनिया में परचम लहराया है। राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर, इतिहासकार रामशरण शर्मा, संपूर्ण क्रांति के जनक जय प्रकाश नारायण, प्रसिद्ध बंगाली उपन्यासकार अन्नदा शंकर रे, पश्चिम बंगाल के पहले मुख्यमंत्री बीसी रॉय, आधुनिक बिहार के निर्माता सच्चिदानंद सिन्हा, बिहार के पहले मुख्यमंत्री श्रीकृष्ण सिंह, अनुग्रह नारायण सिन्हा, पूर्व आईपीएस किशोर कुणाल, गणेश दत्त, उदय नारायण चौधरी, महेंद्र प्रसाद समेत कई बड़ी हस्तियां इस कॉलेज की शोभा बढ़ा चुके हैं।

टॉपर्स जो सम्मानित होंगे

- दीपेंद्र कुमार : हिंदी
- मोहित कुमार: संस्कृत
- जया दिप्ती : दर्शनशास्त्र
- शुभम कुमार उपाध्याय : प्राचीन
- इतिहास एवं पुरातत्व
- हर्ष मौर्य : स्टैटिस्टिक
- आरती अनमोला सिंह : बीएमसी
- मनीष कुमार, प्राचीन इतिहास एवं पुरातत्व
- अविनाश कुमार, मैथिली

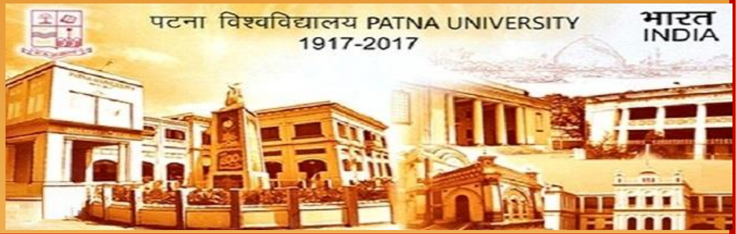

Patna University In News (09.01.2023)

दैनिक भास्कर

आर्ट कॉलेज का स्थापना दिवस 25 को

पटना | पटना आर्ट कॉलेज का स्थापना दिवस 25 जनवरी को है। इस अवसर पर कॉलेज में छात्र-छात्राओं के द्वारा एक प्रदर्शनी लगाई जाएगी। साथ ही स्थापना दिवस कार्यक्रम का आयोजन भी किया जायेगा। कार्यक्रम में कुलपति प्रो गिरीश कुमार चौधरी से लेकर विवि के तमाम अधिकारी मौजूद रहेंगे। कॉलेज के प्राचार्य प्रो अजय कुमार पांडे समेत सभी शिक्षक भी मौजूद रहेंगे। कार्यक्रम को लेकर कॉलेज के द्वारा रूपरेखा तय की जा रही है।

आर्ट कॉलेज में चल रही नैक की तैयारी : कॉलेज के प्राचार्य प्रो अजय कुमार पांडे ने बताया कि कॉलेज में नैक की तैयारी चल रही है। नैक को लेकर वार्षिक रिपोर्ट ऑनलाइन अपलोड किया जा रहा है। जल्द ही कॉलेज के द्वारा एसएसआर अपलोड किया जाएगा। संभवतः छह महीने के भीतर नैक की पूरी तैयारी कर ली जाएगी। इसके बाद कॉलेज में नैक टीम निरीक्षण के लिए आएगी।

दैनिक भास्कर

पीयू : प्रशासनिक- एकेडमिक भवन के लिए जारी हुआ टेंडर

पटना | पटना विवि में 149 करोड़ की लागत से बनने वाले नये प्रशासनिक भवन व एकेडमिक भवन के निर्माण का टेंडर जारी कर दिया गया है। अद्या राज डेवलपर्स को टेंडर एलॉट किया गया है। अब प्रशासनिक भवन के शिलान्यास की तैयारी है। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार दोनों भवन का शिलान्यास करेंगे। इसके लिए समय मांगा जाएगा। जनवरी अंत तक या फरवरी मिड तक शिलान्यास होने की उम्मीद है। इसकी तैयारी चल रही है। नये भवनों का मॉडल, नक्शा आदि सब तैयार है। बस अब काम शुरू होने का इंतजार है।

पटना विश्वविद्यालय

Patna University

Estd. 1917

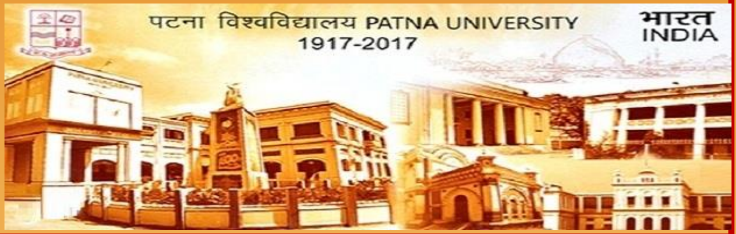

Patna University In News (09.01.2023)

THE TIMES OF INDIA

Patna College to celebrate 161st foundation day today

B K Mishra | TNN

Patna: Patna College, which is gearing up to celebrate its 161st foundation day on January 9, is likely to be upgraded from a single-faculty to multi-faculty institution soon.

The newly appointed principal of the college, Tarun Kumar, said teaching of undergraduate courses in commerce and education would be introduced soon on the popular demand of students and in the light of the recommendation of the New Education Policy, 2020.

At present, the college is imparting undergraduate honours courses in almost all popular subjects of humanities and social sciences. Besides, the institution also runs three vocational courses, namely, bachelor of business administration (BBA), bachelor of computer applications (BCA) and bachelor of mass communications (BMC).

He asserted that some more job-oriented courses would be introduced in the larger interest of students. All efforts will be made to modernize the course curriculum both at the college and university levels so that the college students do not lag behind their counterparts in other premier institutions of the country, he said.

Kumar further said all the

Some more job-oriented courses would be introduced in the larger interest of students

existing societies and clubs of the college would be activated and students would be encouraged to take regular part in co-curricular and extracurricular activities for ensuring all-round development of their personalities.

A healthy academic atmosphere would be created on the campus, both for students and teachers. College teachers would also be asked to help raise the academic standard of this institution through their meaningful contribution to teaching and research, he said.

Established in 1863, Patna College functioned as a government college for several years until it was made a constituent unit of Patna University in 1952. The college has been a co-educational institution right from the beginning.

The college finds mention in E M Forster's book 'A Passage to India'. Noted film director Satyajit Ray had also shot his film 'Seema Badha' on this campus.

The college, which has played an important part in the national freedom struggle and later in 1974 student movement led by Jayaprakash Narayan, has had a galaxy of eminent alumni, including the first chief ministers of Bihar and West Bengal, first chairman of the Constituent Assembly of India, educationist Ganesh Dutt Singh, Olympian Moinul Haque, national poet Ram Dhari Singh Dinkar and a lot of academics, bureaucrats, legal luminaries and politicians over the years.

College alumnus and academician Ram Bachan Roy will be the chief guest at the foundation day celebrations.

पटना विश्वविद्यालय
Patna University

Estd. 1917

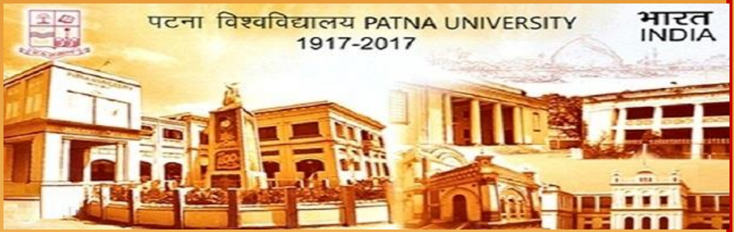

Patna University In News (09.01.2023)

प्रभात खबर लाइफ @ सिटी
जर्नलिज्म जिंदगी का
पटना, सोमवार, 9.01.2023 | 07

परंपरा व प्रगति के विभिन्न पड़ावों को पार करता हुआ पटना कॉलेज आज 160 वर्ष का हो गया है. बिहार, झारखंड, ओड़िशा और नेपाल का एकमात्र सबसे पुराना माना जानेवाला पटना कॉलेज के कीर्तिमानों का एक लंबा इतिहास रहा है. भारत के पहले राष्ट्रपति डॉ राजेंद्र प्रसाद, सच्चिदानंद सिन्हा, जयप्रकाश नारायण समेत कई महापुरुषों के व्यक्तित्व निर्माण मे पटना कॉलेज की प्रमुख भूमिका रही है. बिहार के शैक्षिक, सामाजिक, सांस्कृतिक व राजनीतिक गतिविधियों का यह कॉलेज न सिर्फ केंद्र रहा है, बल्कि उत्प्रेरक भी रहा है. स्थापना के 161 वें वर्ष में प्रवेश करने पर आयोजित समारोह के दौरान फिर से कुछ नया इतिहास रचे जाने की उम्मीद है.

160 साल का हुआ पटना कॉलेज

कॉलेज का स्थापना दिवस आज

तब पटना कॉलेज कलकत्ता यूनिवर्सिटी से था संबद्ध

पटना कॉलेज का 161वां स्थापना दिवस समारोह सोमवार को धूमधाम से मनाया जायेगा. समारोह का उद्घाटन एमएलसी डॉ रामवचन राय करेंगे. कार्यक्रम को लेकर कॉलेज ने पूरी तैयारी कर ली है. कार्यक्रम सेमिनार हॉल में किया जायेगा. समारोह को लेकर परिसर को सजाया गया है. लाइटिंग से भी पटना कॉलेज चमक रहा है. कार्यक्रम में कुलपति प्रो गिरीश कुमार चौधरी के साथ प्रतिकुलपति, यूनिवर्सिटी व कॉलेज के सभी अधिकारी व शिक्षक रहेंगे. इनके अलावा इस कॉलेज में पढ़े कई पूर्ववर्ती स्टूडेंट्स भी भाग लेंगे. उद्घाटन समारोह 11:30 बजे से शुरू होगा. पटना कॉलेज के प्राचार्य डॉ तरुण कुमार ने कहा कि यह हमारे लिए गौरव की बात है कि हम कॉलेज का 161वां स्थापना दिवस मना रहे हैं. कॉलेज पुरानी परंपरा को जीवंत करने में लगा हुआ है. नये-नये काम होंगे. कई सुविधाएं स्टूडेंट्स को दी जायेगी. आगे कॉलेज को बेहतर करना है. बताते चलें कि नौ जनवरी 1863 को कॉलेज की स्थापना की गई थी. 1863 से लेकर 1917 तक यह कलकत्ता यूनिवर्सिटी से संबद्ध रहा था.

स्वर्णिम इतिहास है कॉलेज का

बिहार का सबसे पुराना और देश का पांचवां प्राचीनतम कॉलेज है. कॉलेज की स्थापना अंगरेजों ने भारतीयों के सहयोग से की थी. जुलाई 1835 में पटना में पहली बार हाइस्कूल की स्थापना हुई. 1839 में गवर्नर जनरल लॉर्ड ऑकलैंड के आदेश से पटना में एक केंद्रीय कॉलेज खोलने की योजना बनी. 26 सितंबर 1844 को इस स्कूल को कॉलेज का दर्जा प्राप्त हुआ, लेकिन ढाई वर्ष के बाद ही यह कॉलेज बंद हो गया. 1856-57 में फिर से कॉलेज खोलने की योजना बनी, जो असफल रही. कारण आपसी मतभेद रहा. बिहार में आधुनिक शिक्षा की स्थापना दिवस के अवसर पर 28 अप्रैल, 1858 को पटना हाइस्कूल के बदले पटना में एक जिला स्कूल खोलने की योजना बनी. पटना हाइस्कूल का नाम बदल कर पटना जिला स्कूल कर दिया गया. पटना जिला स्कूल को पटना कॉलेज के रूप में स्थापित करने का सरकारी आदेश 15 नवंबर, 1861 को जारी हुआ. आदेशानुसार जिला स्कूल अगस्त, 1862 में पटना कॉलेजिएट स्कूल का रूप ले लिया. इस कॉलेजिएट स्कूल को 9 जनवरी, 1963 को कॉलेज का दर्जा मिला.

पुराने छात्र जिन्होंने किया नाम रोशन

इतिहासकार केके दत्त 1958 में, 1959 में अनंत सदाशिव अल्तेकर और 1975 में रामशरण शर्मा इंडियन हिस्ट्री कांग्रेस के अध्यक्ष हुए. ज्ञानचंद 1938 में इंडियन इकोनॉमिक्स कॉन्फ्रेंस के अध्यक्ष हुए. बीबी मजुमदार 1951 में और विश्वनाथ वर्मा 1968 में इंडियन पॉलिटीकल कांग्रेस के अध्यक्ष थे.

कुछ खास बात

बिहार में बड़े कॉलेज के रूप में पटना कॉलेज था. कॉलेज में बंगाली वर्चस्व इतना था कि 1872 में जॉर्ज कैम्पबेल ने यह निर्णय लिया कि इसे बंद कर दिया जाये. वे इस बात से क्षुब्ध थे कि 16 मार्च 1872 को कलकत्ता यूनिवर्सिटी के दीक्षांत समारोह में उपस्थित 'बिहार' के सभी स्टूडेंट्स बंगाली थे! यह सरकारी रिपोर्ट में उद्धृत किया गया है कि 'हम बिहार में कॉलेज सिर्फ प्रवासी बंगाली की शिक्षा के लिए खुला नहीं रखना चाहते'. इस निर्णय का विरोध बिहार के बड़े लोगों ने किया. इनका कथन था कि कॉलेज को बंद न किया जाये क्योंकि बिहार में यह एकमात्र शिक्षा केंद्र था जहां बिहार के स्टूडेंट्स डिग्री की पढ़ाई कर सकते थे.

ये भी हैं खास

कैलाश चंद्र बंधोपाध्याय प्रथम छात्र थे, जिन्होंने 1869 में यहां से एमए पास किया. शोभना गुप्ता 1925 में बीए की परीक्षा पास की, वह बीए करनेवाली पहली छात्र थीं. उनके पिता अनुकूल चंद्र गुप्ता 'बिहार हेराल्ड' के प्रथम संपादक थे. 1921 में नीलमणि सेनापति और रशिदुज जमन तथा 1922 में अभयपद मुखर्जी आइसीएस पास किये. ये भी पटना कॉलेज के छात्र थे.

इन लोगों ने पाया बेहतर मुकाम

पटना कॉलेज ने सैकड़ों विद्वान, प्रशासक, देशभक्त, अधिकारी, वकील, जज, पत्रकार, लेखक पैदा किये हैं. बिहार के प्रथम मुख्यमंत्री श्रीकृष्ण, जयप्रकाश नारायण, राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर', अनुग्रह नारायण सिन्हा, सच्चिदानंद सिन्हा, डॉ टीपी सिंह, सर सुल्तान अहमद, इतिहासकार राम नारायण शर्मा, सैयद हसन अस्करी, योगेंद्र मिश्र, जगदीश चंद्र झा, गोरखनाथ सिंह, पंडित राम अवतार शर्मा, बलिराम भगत, टीपी सिंह, मुचकुंद दुबे, आरएस शर्मा, यशवंत सिन्हा, प्रो पी दयाल, अजनी कुमार सिंह, डॉ अजीमुद्दीन अहमद, अरबी सर यदुनाथ सरकार, डॉ सुविमल चंद सरकार, डॉ डीएम दत्त, जेपी नड्डा व अन्य कई.

प्रो स्नेहलता 2006 में पहली महिला प्राचार्य बनीं: एक अक्तूबर 1917 में कोलकाता विवि से अलग होकर पटना विवि की स्थापना हुई. 1863 में स्थापित कॉलेज के प्रथम प्राचार्य जेके रोजर्स अंग्रेज थे. 1934 में राम प्रसाद खोसला पहले भारतीय प्राचार्य बने. जबकि 1952 में मो कलीमुद्दीन अहमद पहले मुस्लिम प्राचार्य बने. जबकि प्रो स्नेहलता प्रसाद 2006 में पहली महिला प्राचार्य बनीं.

शिक्षा के क्षेत्र में कॉलेज ने अनेक रत्न दिये

शिक्षा के क्षेत्र में कॉलेज ने अनेक रत्न दिये. कलीमुद्दीन अहमद, अख्तर औरेनवी अहमद और एस सदरूद्दीन अहमद उर्दू के विद्वान थे. बंगला साहित्य के जानेमाने हस्ती थे सरदींदु बनर्जी. भवानीचरण भट्टाचार्या और अमीया चक्रवर्ती अंग्रेजी के प्रसिद्ध ज्ञाता थे. रामाधारी सिंह दिनकर. शसमसुद्दीन अहमद हफीद और सैयद हसन उर्दू के, इकवाल हुसैन फारसी के, हरि मोहन झा मैथिली के, जनार्दन झा हिंदी कविता के, रमानाथ झा मैथिली के इतिहास के क्षेत्र में, सुभद्र झा मैथिली आलोचना के लिए, प्राणनाथ महंती उड़ीया भाषा के क्षेत्र में, खड़गमन मल्ल नेपाली लेख में, उपन्यासकार कृपनाथ मिश्र, बंगला कवि कलिंदी चरण पाणिग्रही एवं बैकुंठ नाथ पटनायक, हिंदी के विश्वनाथ प्रसाद, बंगला साहित्यकार एवं कवि आनंद शंकर रे, बंगला पत्रकार मनिंद्र चंद्र समाद्दार, हिंदी ड्रामा विशेषज्ञ देवेंद्र नाथ वर्मा, हिंदी कवि नलिन विलोचन शर्मा, साहित्यकार दिवाकर प्रसाद विद्यार्थी, साहित्यकार धर्मेंद्र ब्रह्मचारी, उर्दू के साहित्यकार अब्दुल बदूद आदि विद्वानों ने पटना कॉलेज का नाम जिस रूप में रौशन किया है वह कॉलेज के लिए अब तक गौरव की बात है. जानेमाने इतिहासकार प्रो रामशरण शर्मा, प्रो सय्यद हसन अस्करी, प्रो केके दत्त, राजनीति शास्त्र के विद्वान प्रो मेनन, प्रो फिलिप्स और अर्थशास्त्र के प्रोफेसर बाथेजा जैसे शिक्षक यहां की गरिमा में चार चांद लगाते थे.

विधान परिषद का सेशन कॉलेज कैंपस में ही चलता था

पटना कॉलेज बिहार, झारखंड, ओड़िशा और नेपाल का सबसे पुराना और प्रतिष्ठित कॉलेज रहा है. सायंस कॉलेज, लॉ कॉलेज, इंजीनियरिंग कॉलेज और पीएमसीएच भी यहीं से निकले हैं. बंगाल से अलग राज्य बनने के बाद बिहार विधान परिषद का सेशन पटना कॉलेज कैंपस में ही चलता था. बीते साल राज्य के सौ साल पूरे होने पर राज्य सरकार के तमाम मंत्री समेत पूरा अमला यहां पहुंचा था. शैक्षिक, सांस्कृतिक व लोकतांत्रिक गतिविधियों की शुरुआत यहीं से हुई थी.

100 वर्ष पूरे होने पर सर्वपल्ली राधाकृष्णन थे मुख्य अतिथि

1963 में भारत के राष्ट्रपति सर्वपल्ली राधाकृष्णन 100वीं वर्षगांठ पर आयोजित समारोह में मुख्य अतिथि थे. कॉलेज के 100 वर्ष पूरे होने पर भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने कॉलेज में कहा था कि मुझे कोई शक नहीं कि इस कॉलेज ने कई उम्दा लोगों को जन्म दिया है. जब आप किसी शैक्षिक संस्थान की बात करते हैं, तब आपके मन में कई बातें रहती हैं. इसको आप किस प्रकार लेते हैं, यह आपकी मानसिकता पर निर्भर है.

पटना कॉलेज से ही जागी मैथिली साहित्य पढ़ने की ललक

उषा किरण खान

किसी भी विद्यार्थी के जीवन में उसकी पढ़ाई और उन्हें पढ़ाने वाले शिक्षकों का बड़ा महत्व होता है, जिसे कोई भी व्यक्ति कभी चाह कर भी नहीं भूल सकता है. वैसे तो मैंने इंटर की पढ़ाई मगध महिला कॉलेज से किया था, लेकिन बीए ऑनर्स के लिए मैंने पटना कॉलेज में दाखिला लिया. 1962-64 सत्र में इतिहास से मैंने ऑनर्स की पढ़ाई की. मैथिली भाषा से जुड़ाव हमेशा से रहा लेकिन जब पटना कॉलेज में दाखिला लिया तो ऑनर्स के अलावा वर्नाकुलर विषय के रूप में हिंदी के अलावा देसी भाषा को चुनना था. मैंने 50 मार्क्स का मैथिली भाषा का चयन किया. यहीं से मेरे अंदर मैथिली साहित्य को पढ़ने की ललक जागी. मैथिली पढ़ने-लिखने की ललक व उन्मुखता जगाने में प्रोफेसर लेखनाथ मिश्रा बहुत बड़ा योगदान रहा है. उन्होंने भाषा को इतनी आत्मीयता से पढ़ाते थे कि क्लास के सभी विद्यार्थी पूरी लग्न के साथ मेहनत करते थे. हमें कभी ऐसा लगता ही नहीं था कि यह वर्नाकुलर विषय है. प्रोफेसर लेखनाथ मिश्रा की खासियत थी कि वे विद्यार्थियों के साथ खुद भी मेहनत करते थे और दिये टास्क को बारिकी से देख कर उसमें हुई गलतियों को बेहतर तरीके से समझाते थे. आज पटना कॉलेज अपना 161 स्थापना दिवस मना रहा है. इस अवसर पर मैं कॉलेज के सभी शिक्षकों के प्रति आभार व्यक्त करती हूं कि उन्होंने मुझे पढ़ाया और इस काबिल बनाया कि आज खुद की अलग पहचान स्थापित कर पायी हूं.